श्री प्रेतराज सरकार आरती

|| प्रेतराज सरकार की आरती ||

जय प्रेतराज कृपालु मेरी,

अरज अब सुन लीजिये |

मैं शरण तुम्हारी आ गया हूँ,

नाथ दर्शन दीजिये |

मैं करूं विनती आपसे अब,

तुम दयामय चित धरो |

Astrolekha

चरणों का ले लिया आसरा,

प्रभु वेग से मेरा दुःख हरो |

सिर पर मोरमुकुट करमें धनुष,

गलबीच मोतियन माल है |

जो करे दर्शन प्रेम से सब,

कटत तन के जाल है |

जब पहन बख्तर ले खड़ग,

बांई बगल में ढाल है |

ऐसा भयंकर रूप जिनका,

देख डरपत काल है |

अति प्रबल सेना विकट योद्धा,

संग में विकराल है |

तब भूत प्रेत पिशाच बांधे,

कैद करते हाल है |

तब रूप धरते वीर का,

करते तैयारी चलन की |

संग में लड़ाके ज्वान जिनकी,

थाह नहीं है बलन की |

तुम सब तरह समर्थ हो,

प्रभुसकल सुख के धाम हो |

दुष्टों के मारनहार हो,

भक्तों के पूरण काम हो |

मैं हूँ मती का मन्द मेरी,

बुद्धि को निर्मल करो |

अज्ञान का अंधेर उर में,

ज्ञान का दीपक धरो |

सब मनोरथ सिद्ध करते,

जो कोई सेवा करे |

तन्दुल बूरा घृत मेवा,

भेंट ले आगे धरे |

सुयश सुन कर आपका,

दुखिया तो आये दूर के |

Astrolekha

सब स्त्री अरु पुरुष आकर,

पड़े हैं चरण हजूर के |

लीला है अदभुत आपकी,

महिमा तो अपरंपार है |

मैं ध्यान जिस दम धरत हूँ,

रच देना मंगलाचार है |

सेवक गणेशपुरी महन्त जी,

की लाज तुम्हारे हाथ है |

करना खता सब माफ़,

उनकी देना हरदम साथ है |

दरबार में आओ अभी,

सरकार में हाजिर खड़ा |

इन्साफ मेरा अब करो,

चरणों में आकर गिर पड़ा |

अर्जी बमूजिब दे चुका,

अब गौर इस पर कीजिये |

Astrolekha

तत्काल इस पर हुक्म लिख दो,

फैसला कर दीजिये |

महाराज की यह स्तुति,

कोई नेम से गाया करे |

सब सिद्ध कारज होय उनके,

रोग पीड़ा सब टरे |

Astrolekha

"सुखराम" सेवक आपका,

उसको नहीं बिसराइये |

जै जै मनाऊं आपकी,

बेड़े को पार लगाइये |